



Haathon Haath Phoophi Se Sulh Kar Li (Gujarati)

હાથોં હાથ ફૂફી સે સુલ્હ કર લી

મઅ રિશ્તેદારોં કે સાથ અચ્છે સુલૂક કે ફઝાઈલ



શૈબે તરીકત, અમીરે અહલે સુબ્હત, જ્ઞાનિયે ઘ'પતે ઇસ્લામી, હઝરતે અલ્લામા મૌલાના અબૂ ઝિલાલ

મુહમ્મદ ઈબ્ત્યાસ અત્તાર કાદિરી ર-ઝવી

کامش برکت الہم
المسالیہ



الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

किताब पढने की दुआ

अः शैभे तरीकत, अभीरे अहले सुन्नत, आनिये दा'वते ँस्लामी, हःरत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद ँल्यास अतार कादिरि र-अवी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ दीनी किताब या ँस्लामी सबक पढने से पहले जैल में दी हुँद दुआ पढ लीजिये إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढेंगे याद रहेगा. दुआ येह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तरजमा : ओ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर ँल्मो हिकमत के दरवाजे ढोल दे और हम पर अपनी रहमत नाजिल करमा ! ओ अ-अमत और बुजुर्गी वाले। (المستطرف ج ١ ص ٤٠٠ دار الفكر بيروت)

नोट : अव्वल आभिर अेक अेक बार दुइद शरीफ पढ लीजिये.

तालिभे गमे मदीना
व अकीअ
व मगिंरत



13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

हाथों हाथ झूठी से सुलह कर ली

येह रिसाला (हाथों हाथ झूठी से सुलह कर ली)

शैभे तरीकत, अभीरे अहले सुन्नत, आनिये दा'वते ँस्लामी हःरत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद ँल्यास अतार कादिरि र-अवी जियाँ دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ ने उर्दू अजान में तहरीर करमाया है.

मजलसे तराजिम (दा'वते ँस्लामी) ने ँस रिसाले को गुजराती रस्मुल अत में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-अतुल मदीना से शाअेअ करवाया है. ँस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाओं तो मजलसे तराजिम को (अ अरीअअे मक्तूब, ँ-मेँल या SMS) मुत्तलअ करमा कर सवाअ कमाँये.

राबिता : मजलसे तराजिम (दा'वते ँस्लामी)

मक-त-अतुल मदीना, सिलेक्टेड हाँस, अलिइ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाजा, अहमदआबाद-1, गुजरात, ँन्डिया

MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

हाथों हाथ झूठी से सुलह कर ली

शैतान वापस सुस्ती दिलाओ मगर आप येह रिसाला (23 सइहात) मुकम्मल पढ लीजिये إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ आप को मुझीद तरीन मा'लूमात मिलेंगी.

दुइद शरीफ़ की इमीलत

(صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّد)

उठरते सय्यिदुना अबुल मुजफ़्फ़र मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह भय्याम समर कन्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي इरमाते हैं : मैं ओक रोज़ रास्ता लूल गया, अयानक ओक साहिब नजर आओ और उन्हों ने कहा : “मेरे साथ आओ.” मैं उन के साथ हो लिया. मुझे गुमान हुवा के येह उठरते सय्यिदुना भिउर الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ हैं. मेरे इस्तिस्सार (या'नी पूछने) पर उन्हों ने अपना नाम भिउर बताया, उन के साथ ओक और भुजुर्ग ली थे, मैं ने उन का नाम दरयाइत किया तो इरमाया : येह इल्यास (عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ) हैं. मैं ने अर्ज की : अब्दुल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रहमत इरमाओ, क्या आप दोनों उठरात ने सरवरे काओनात, शहन्शाहे मौजूदात, महबूबे रब्बुल अर्द वस्समावात, अहमदे मुजतबा, मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की जियारत की है ? उन्हों ने इरमाया : हां. मैं ने अर्ज की : सरकारे मदीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरइदे पाक पढा अल्लाह عُزَّوَجَلَّ उस पर दस रइमतें भेजता है. (स्ल)

सुना हुआ इशति पाक बताईये ता के में आप से रिवायत कर सकूं. उन्होंने ने इरमाया के हम ने रसूले जुदा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को येह इरमाते सुना के जो शप्स मुझ पर दुरइदे पाक पढे उस का हिल निझाक से ईसी तरह पाक किया जाता है जिस तरह पानी से कपडा पाक किया जाता है. नीज जो शप्स “صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ” पढता है तो वोह अपने ओपर रइमत के 70 दरवाजे ओल लेता है.

(الْقَوْلُ الْبَدِيعُ ص 277، جَذْبُ الْقُلُوبِ ص 230)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

हाथों हाथ झूठी से सुलह कर ली

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! आज कल भात भात पर लोग रिशतेदारियां काट कर रण देते हैं, लिहाजा आपस में मलुब्बत की इजा काईम होने की प्वाइश की अख्ठी निख्यत के साथ सवाब कमाने के लिये रिशतेदारों के साथ हुस्ने सुलूक के जिम्न में नेकी की दा'वत पेश करते हुअे म-दनी इल पेश करने की सअ्य करता हूं : हजरते सय्यिदुना अबू हुरैरा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की अहादीसे मुभा-रका बयान इरमा रहे थे, ईस दौरान इरमाया : हर कातेअे रेहूम (या'नी रिशतेदारी तोउने वाला) हमारी मलुफ़िल से उठ जाअे. अेक नौ जवान उठ कर अपनी झूठी के हां गया जिस से उस का कई साल पुराना जगडा था, जब दोनों अेक दूसरे से राजी हो गअे तो उस नौ जवान से झूठी ने कहा : तुम जा कर ईस का सभब पूछो, आभिर

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शप्स मुज पर दुइदे पाक पढना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया. (طبرانی)

औसा क्यूं हुवा ? (या'नी सख्खिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के अे'लान की क्या हिकमत है ?) नौ जवान ने छाजिर हो कर जब पूछा तो हजरते सख्खिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरमाया के मैं ने हुजूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से येह सुना है : “जिस कौम में कातेअे रेह्म (या'नी रिश्तेदारी तोउने वाला) हो, उस कौम पर अद्लाह की रहमत का नुजूल नहीं होता.” (الزَّوْجِرُ عَنِ اقْتِرَافِ الْكِبَائِرِ ج ٢ ص ١٥٣)

सास बहू में सुलह का राज

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! देखा आप ने ! पहले के मुसल्मान किस कदर भौंके भुदा रफने वाले हुवा करते थे ! भुश नसीब नौ जवान ने अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ के उर के सभभ झौरन अपनी झूठी के पास भुद छाजिर हो कर सुलह की तरकीब कर ली. सभी को याहिये के गौर करें के पानदान में किस किस से अनजन है जब मा'लूम हो जाअे तो अब अगर शर-ई उजूर न हो तो झौरन नाराज रिश्तेदारों से “सुलह व सफ़ाई” की तरकीब शुइअ कर दें. अगर जुकना भी पडे तो बेशक रिजाअे धलाही के लिये जुक जाअें, اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ सर बुलन्दी पाअेंगे. इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ है : “जो अद्लाह يَأْمُرُ بِالتَّوَّاصِعِ لِلَّهِ رَفَعَهُ اللهُ - صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के लिये आजिजी करता है अद्लाह तआला उसे बुलन्दी अता इरमाता है.” (شُعَبُ الْاِيْمَانِ ج ٦ ص ٢٧٦ حديث ٨١٤٠)

को अन्न का गहवारा बनाने के लिये दा'वते ईस्लामी के मुश्कभार म-दनी माहोल से वाबस्ता हो जाईये और हर माह कम अज कम तीन दिन के लिये म-दनी काईले में सुन्नतों भरा सइर कीजिये नीज म-दनी ईन्आमात के मुताबिक जिन्दगी गुजारिये. आप की तरगीब व तहरीस

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइदुइ पाक न पढा तहकीक
वोह बट भप्त हो गया. (अह)।

के लिये अेक म-दनी बहार पेश करता हूं, युनान्चे बाबुल मदीना (कराची) के अेक इस्लामी भाई के बयान का फुलासा है के तवील अर्से से मेरी जौज और वालिदा या'नी सास बडू में ખૂબ ठनी हुई थी, नतीजतन जौज रुठ कर मयके जा बैठी. मैं सप्त परेशान था, समज में नही आता था के इस मस्अले को कैसे हल करूं. जैसे में दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-अतुल मदीना की जारी कर्दा "म-दनी मुजा-करे" की VCD "घर अमन का गहवारा कैसे बने!" मेरे हाथ आई. मौजूअ देखा तो बड़ी उम्मीद के साथ येह VCD फुद भी देपी और अपनी वालिदअे मोह-त-रमा को भी दिखाई और अेक VCD अपने सुसराल भी भेज दी. मेरी वालिदा को येह VCD इतनी पसन्द आई के उन्हीं ने इसे दो बार देखा और हैरत अंगेज तौर पर मुज से इरमाने लगीं : "यल बेटा ! तेरे सुसराल यलते हें." मैं ने सुकून का सांस लिया के लगता है जो काम मैं भरपूर इन्किरादी कोशिश के बा वुजूद न कर सका वोह इस VCD ने कर दिया. मेरे सुसराल पड़ोय कर वालिदा सालिबा ने बड़ी महब्बत से मेरी जौज को मनाया और उसे वापस घर ले आई. दूसरी जनिब मेरी जौज ने भी मुस्बत तर्जे अमल का मुजा-हारा किया और घर पड़ोयने के बा'द दूसरे ही दिन अपनी सास (या'नी मेरी वालिदा) से कहने लगीं : अम्मीजान ! मेरा कमरा बहुत बडा है, जब के दीगर घर वाले जिस कमरे में रहते हें वोह कदरे छोटा है, आप मेरा कमरा ले लीजिये और मैं उस छोटे कमरे में रिहाईश इप्तिवार कर लेती हूं. الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ।
हमारा घर जो इतने और इसाद का शिकार था, दा'वते इस्लामी की ब-र-कत से अमन का गहवारा बन गया. (म-दनी मुजा-करे की मजकूर VCD

﴿رَمَانَهُ مُسْتَقِيمًا﴾ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुबुह और दस मरतबा शाम दुइटे पाक पढा
उसे डियामत के दिन मेरी शफाअत मिलेगी. (रुहनुमा)

“घर अम्न का गडवारा कैसे बने” मक-त-बतुल मदीना से उदिय्यतन ली
जा सकती और दा'वते इस्लामी की वेब साईट www.dawateislami.net
पर देखी और सुनी जा सकती है)

सिलअे रेह्मी की ता'रीफ़

सिला के मा'ना हैं : **يَا'نِي كَيْسِي** या'नी किसी
बी किस्म की बलाई और अेडसान करना. (الرّؤا ج 2 ص 106) और
रेह्म से मुराद : कराबत, रिशतेदारी है. (لسانُ العَرَب ج 1 ص 147) “बहारे
शरीअत” में है : सिलअे रेह्म के मा'ना : रिशते को जोडना है या'नी
रिशते वालों के साथ नेकी और सुलूक (या'नी बलाई) करना.

(बहारे शरीअत, जि. 13, स. 558)

रिआअे इलाही के लिये रिशतेदारों के साथ सिलअे रेह्मी और
इन की बह सुलूकी पर इन्हें दर गुजर करना अेक अजीम अप्लाकी
भूभी है और अद्लाड **عَزَّوَجَلَّ** के यहां इस का बडा सवाब है.

रिशतेदारों के माली व अप्लाकी हुक्क अदा कीजिये

पारह 15 सूअे बनी इसराईल आयत नम्बर 26 में अद्लाड
عَزَّوَجَلَّ इशाईद इरमाता है :

وَآتِ ذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ

(प 10, बनी असरायिल: 26)

तर-ज-मअे कन्जुल इमान : और
रिशतेदारों को उन का हक दे.

सहरुल अइजिल उजरते अद्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद
नईमुदीन मुरादआबादी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي** “अजाईनुल इरफ़ान” में इस
आयते करीमा के तहत लिखते हैं : इन के साथ सिलअे रेह्मी कर
और महब्बत और मेलजोल और खबर गीरी और मौकअ पर महद
और हुस्ने मुआ-शरत. मस्अला : और अगर वोह महारिम (या'नी

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइद शरीफ़ न पढा उस ने जफ़ा की.. (عبارة زان)

ऐसा करीबी रिश्तेदार के अगर उन में से जिस किसी को भी मर्द और दूसरे को औरत इर्ज किया जाये तो निकाह हमेशा के लिये हराम हो जैसे बाप, मां, बेटा, बेटी, भाई, बहन, यया, झूठी, मामूं, जाला, भान्जा, भान्जो वगैरा) में से हों और मोहताज हो जायें तो उन का भय उठाना येह भी उन का हक है और साहिबे इस्तिताअत रिश्तेदार पर लाजिम है.

(अजाइनुल इरफ़ान, स. 530, मत्बूआ मक-त-अतुल मदीना)

सिलअे रेहमी करने के 10 इअेदे

हजरते सय्यिदुना इकीह अबुलवैस समर कन्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي इरमाते हैं : सिलअे रेहमी करने के 10 इअेदे हैं : ❀ अल्लाह एज़्र व जल की रिआ हासिल होती है ❀ लोगों की ખुशी का सबब है ❀ इरिशतों को मसरत होती है ❀ मुसल्मानों की तरफ़ से उस शप्स की ता'रीफ़ होती है ❀ शैतान को इस से रन्ज पहोंयता है ❀ उम्र बढ़ती है ❀ रिज़क में अ-र-कत होती है ❀ इत हो जाने वाले आभाओ अजदाह (या'नी मुसल्मान बाप दादा) ખुश होते हैं ❀ आपस में मडब्बत बढ़ती है ❀ वफ़ात के बा'द इस के सवाब में इअाफ़ा हो जाता है, क्यूंके लोग उस के हक में हुआओ खैर करते हैं.

(تنبيه الغافلين ص ۷۳)

तोडते नहीं, जोडते और सिलअे रेहमी करते हैं

पारह 13 सू-रतुरा'द आयत नम्बर 21 में अल्लाह एज़्र व जल का इरमान है :

وَالَّذِينَ يَصِلُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ
بِهِ أَنْ يُوصَلَ

तर-ज-मअे कन्जुल इमान : और वोह के जोडते हैं उसे जिस के जोडने का अल्लाह ने हुकम दिया.

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर रोजे जुमुआ दुइद शरीफ़ पढेगा मैं क्रियामत के दिन उस की शफ़ाअत करेगा. (क्रियाएँ)

सदरुल अफ़जिल हजरते अल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي “अजाईनुल ईरफ़ान” में इस आयते करीमा के तहत लिखते हैं : या’नी अल्लाह की तमाम किताबों और उस के कुल रसूलों पर ईमान लाते हैं और आ’ज को मान कर आ’ज से मुन्किर हो कर उन में तफ़रीक नहीं करते या येह मा’ना हैं के : हुकूके कराअत की रिआयत रખते हैं और रिश्ता कत्अ नहीं करते. इसी में रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की कराअतें और ईमानी कराअतें भी दाखिल हैं, सादाते किराम का अेहतिराम और मुसल्मानों के साथ मुवदत (या’नी महब्बत) व अेहसान और उन की मदद और उन की तरफ़ से मुदा-इ-अत और उन के साथ शफ़कत और सलाम व हुआ और मुसल्मान मरीजों की ईयादत और अपने दोस्तों, जादिमों, हमसायों (और) सफ़र के साथियों के हुकूक की रिआयत भी इस में दाखिल है. (अजाईनुल ईरफ़ान, स. 482, मत्बूआ मक-त-अतुल मदीना)

बेहतरिन आदमी की पुसूसियात

साहिबे कुरआने मुबीन, महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिको अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अेक मर्तबा मिम्बरे अकदस पर जल्वा इरमा थे के अेक सहाबी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अर्ज की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! लोगों में सभ से अख़्श कौन है ?” इरमाया लोगों में से वोह शप्स सभ से अख़्श है जो कसरत से कुरआने करीम की तिलावत करे, जियादा मुत्तकी हो, सभ से जियादा नेकी का हुकूम देने और बुराई से मन्अ करने वाला हो और सभ से जियादा सिलअे रेहूमी (या’नी रिश्तेदारों के साथ अख़्श बरताव) करने वाला हो. (मुसुनाम अहमद ज १० व १०२ ६०२ ६०४ २१००)

﴿البر﴾ इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुठ पर दुइडे पाक की कसरत करो बेशक येड तुम्हारे लिये तदारत है.

तिलावत, परहेज गारी, नेकी की दा'वत और सिलअे रेह्मी

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! भूब सवाब लूटने की निव्यत से बयान कर्दा उदीसे मुभा-रका की रोशनी में कुछ "नेकी की दा'वत" पेश करने की सआदत हासिल करता हूं. ईस रिवायत में सब से अख्छे आदमी की यार भूसूसिख्यात बयान की गई हैं : (1) ब कसरत तिलावत (2) भूब परहेज गारी (3) सब से जियादा नेकी की दा'वत देना और भुराई से मुभा-न-अत करना और (4) रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक. वाकेई येड यारों निहायत ही उम्हा सिफ़ात हैं अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ नसीब करे. आमीन. ईन यारों के इजाईल मुला-उजा हों ﴿1﴾ उजरते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है के नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे आदम व बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया : क्रियामत के दिन कुरआन पढने वाला आयेगा तो कुरआन अर्ज करेगा : या रब عَزَّ وَجَلَّ ! ईसे हुद्ला (या'नी जन्नत का लिबास) पडना. तो उसे करामत का हुद्ला (या'नी भुजुर्गी का जन्नती लिबास) पडनाया जायेगा. फिर कुरआन अर्ज करेगा : "या रब عَزَّ وَجَلَّ ! ईस में ईजाफ़ा इरमा" तो उसे करामत का ताज पडनाया जायेगा, फिर कुरआन अर्ज करेगा : "या रब عَزَّ وَजَلَّ ! ईस से राजी हो जा." तो अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस से राजी हो जायेगा. फिर उस कुरआन पढने वाले से कहा जायेगा : कुरआन पढता जा और जन्नत के द-रजात तै करता जा और उर आयत पर उसे अक ने'मत अता की जायेगी. (त्रुम्डी ج ٤ ص ٤١٩ حديث ٢٩٢٤)

﴿2﴾ परहेज गारों को आभिरत में काम्याबी की नवीद (या'नी भुश ञबरी) सुनाई गई है युनान्ये पारह 25 सू-रतुजुफ़रुई आयत नम्बर 35 में ईशाई होता है :

١٤ وَأَخْرَجَ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٣٥﴾

ફરમાને મુસ્તફા صَلَّی اللہُ تَعَالَى عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : તુમ જહાં ભી હો મુઝ પર દુરુદ પઢો કે તુમહારા દુરુદ મુઝ તક પહોંચતા હૈ. (طرائق)

તુમહારે રબ કે પાસ પરહેઝ ગારોં કે લિયે હૈ. ﴿3﴾ હઝરતે સચ્ચિદુના કા'બુલ અહ્બાર صَلَّی اللہُ تَعَالَى عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم કા ઇશાદિ હૈ “જન્નતુલ ફિરદૌસ ખાસ ઉસ શખ્સ કે લિયે હૈ જો **أَمْرٌ بِالْمَعْرُوفِ وَنَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَرِ**” (યા'ની નેકી કા હુકમ દે ઓર બુરાઈ સે મન્અ કરે).¹ ﴿4﴾ ફરમાને મુસ્તફા صَلَّی اللہُ تَعَالَى عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم હૈ : જિસે યેહ પસન્દ હો કે ઉસ કી ઉમ્ર ઓર રિઝ્ક મેં ઇઝાફા કર દિયા જાએ તો ઉસે ચાહિયે કે અપને વાલિદૈન કે સાથ અચ્છા બરતાવ કરે ઓર અપને રિશ્તેદારોં કે સાથ સિલએ રેહ્મી કિયા કરે.²

ઉમ્ર વ રિઝ્ક મેં ઝિયાદતી કે મા'ના

દા'વતે ઇસ્લામી કે ઇશાઅતી ઇદારે મક-ત-બતુલ મદીના કી મત્બૂઆ 1197 સફહાત પર મુશ્તમિલ કિતાબ, “બહારે શરીઅત” જિલ્દ 3 સફહા 560 પર સદરુશશરીઅહ, બદરુત્તરીકહ હઝરતે અલ્લામા મૌલાના મુફ્તી મુહમ્મદ અમજદ અલી આ'ઝમી **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي** ફરમાતે હૈં : હદીસ મેં આયા હૈ કે “સિલએ રેહ્મ સે ઉમ્ર ઝિયાદા હોતી હૈ ઓર રિઝ્ક મેં વુસ્અત (યા'ની ઝિયાદતી) હોતી હૈ.” બા'ઝ ઉ-લમા ને ઇસ હદીસ કો ઝાહિર પર હમ્લ કિયા હૈ (યા'ની હદીસ કે ઝાહિરી મા'ના હી મુરાદ હૈં) યા'ની યહાં કઝા મુઅલ્લક મુરાદ હૈ ક્યૂંકે કઝા મુબરમ ટલ નહીં સકતી.³

اِذَا جَاءَ أَجْلُهُمْ فَلَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً ۖ وَإِلَّا يَسْتَقْبِلُ مَوْتَهُمْ ۗ (پ ۱۱، یونس: ۴۹)

તર-જ-મએ કન્ઝુલ ઇમાન : જબ ઉન કા વા'દા આએગા તો એક ઘડી ન પીછે હટ્ટે ન આગે બઢે.

ઓર બા'ઝ (ઉ-લમાએ કિરામ **رَحْمَةُ اللَّهِ السَّلَام**) ને ફરમાયા કે

1: تَنْبِيْهُ الْمَغْتَرِبِيْنَ ص ۲۳۶ ۲: الْكَرْغِيْبِ وَالْتَرْهِيْبِ ج ۳ ص ۲۱۷ حدیث ۱۶

3 : કઝા સે મુરાદ યહાં કિસ્મત હૈ. કઝા કી અક્સામ ઓર ઇસ કે બારે મેં તફ્સીલાત જાનને કે લિયે મક-ત-બતુલ મદીના કી મત્બૂઆ બહારે શરીઅત જિલ્દ અવ્વલ સફહા 14 તા 17 કા મુતા-લઆ કીજિયે, ખુસૂસન મજલિસ, અલ મદીનતુલ ઇલ્મિયા કી તરફ સે દિયે ગએ હવાશી બે મિસાલ ઓર મુ-તઅદદ વસાવિસ કા ઇલાજ હૈં.

इरमाने मुस्तफ़ा: صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर दस भरतबा दुइटे पाक पढा अद्लाह उस पर सो रउमते नाजिल इरमाता है. (طبرانی)

जियादतिये उम्र का येह मतलब है के मरने के आ'द ली इस का सवाब लिखा जाता है गोया वोह अब ली जिन्दा है या येह मुराद है के मरने के आ'द ली उस का जिके पैर लोगों में बाकी रहता है. (رَدُّ الْمُحْتَار ج ٩ ص ٦٧٨)

दो इरामीने मुस्तफ़ा ﴿١﴾ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जो अद्लाह और कियामत पर इमान रखता है उसे याहिये के सिलअे रेह्मी करे (بخاری ج ٤ ص ١٣٦ حديث ٦١٣٨) ﴿٢﴾ कियामत के दिन अद्लाह के अर्श के साअे में तीन किस्म के लोग होंगे, (उन में से अेक है) सिलअे रेह्मी करने वाला. (أَلْفَرْدَوْس بِمَأْثُورِ الْخِطَاب ج ٢ ص ٩٩ حديث ٢٥٢٦)

उम्मुल मुअमिनीन हजरते जैनब और सिलअे रेह्मी

उम्मुल मुअमिनीन हजरते सय्यि-दतुना आ'शशा सिद्दीका उम्मुल मुअमिनीन हजरते सय्यि-दतुना आ'शशा सिद्दीका से जियाद दीनदार, जियाद परहेज गार, जियाद सखी, जियाद सिलअे रेह्मी और जियाद स-दका करने वाली को'ई औरत नहीं देणी. (مسلم ص ١٣٢٥ حديث ٢٤٤٢)

10 हजार दिरहम रिशतेदारों को बांट दिये

अमीरुल मुअमिनीन हजरते सय्यिदुना उमर फ़ाड़के आ'जम उम्मुल मुअमिनीन हजरते जैनब की रिशतेदारों में 10 हजार दिरहम बांटे तो उन्हीं ने येह रकम अपने रिशतेदारों को तकसीम कर दी. (اسد الغابة ج ٧ ص ١٤٠ مُلَخَّصًا)

रिशतेदारों से तअल्लुक तोडने से बचिये

कुरआने पाक में ईशादि बारी तआला है :

وَ اتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَسَاءَلُونَ بِهِ

तर-ज-मअे कन्जुल इमान : और अद्लाह से उरो, जिस के नाम पर मांगते

وَالْأَرْحَامَ ط (٤٦، النساء: ١)

दो और रिशतों का लिहाज रभो.

इरमाने मुस्तफ़ा: صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुइद शरीफ़ न पढे तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शप्स है. (तन्बिह) (7)

ईस आयते मुभा-रका के तहत “तइसीरे मज़हरी” में है :
या’नी तुम कत्अे रेइमी (या’नी रिश्तेदारों से तअव्लुक तोउने) से बयो.

(तफ़्सीर म्पहरी ज २ व ३)

जान भूज कर कत्अे रेइमी को जाघज समजना कुइ है

इरमाने मुस्तफ़ा: صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: रिश्ता काटने वाला जन्नत में नहीं जाओगा. (बुखारी ज ६ व ९७ हदीथ ०११६) उजरते अल्लामा अली कारी उइसी उदीसे पाक के तहत लिखते हैं : ईस से मुराद येह है के जो शप्स बिगैर किसी सभब और बिगैर किसी शुब्हे और कत्अे रेइमी के हराम होने के ईल्म के बा वुजूद ईसे उलाल और जाईज समजता हो वोह काइर है, उमेशा जहन्नम में रहेगा और जन्नत में नहीं जाओगा, या येह मुराद है के पहले जाने वालों के साथ जन्नत में नहीं जाओगा या येह मुराद है के अजाब से नजात पाने वालों के साथ भी नहीं जाओगा (या’नी पहले सजा पाओगा इर जाओगा). (मुराता ज ७ तहत हदीथ ६१२२)

“तइसीरे मुल भुपारी” में है : ईस में ईप्तिलाइ नहीं के सिलअे रेइमी वाजिब है और ईस को कत्अ करना कभीरा गुनाह है. सिलअे रेइमी के कुछ द-रजात हैं, कम अज कम द-रजा येह है के नाराजी तर्क कर दे और सलाम व कलाम से सिला (या’नी अख्शा सुलूक) करे, कुदरत और हाजत के ईप्तिलाइ से सिला (या’नी सुलूक) की मुप्तलिइ हालतें हैं, बा’ज हाल में सिलअे रेइमी वाजिब है और बा’ज में मुस्तहब है, अगर बा’ज हालात में सिला किया और पूरी तरह न किया तो ईस को कत्अे रेइमी नहीं कहते.

(तन्बिह البخारी ज ७ व २१)

अेक मा’लूमाती इतवा मुला-उजा इरमाईये, इतावा र-उविय्या

जिल्द 13 सईहा 647 ता 648 पर है :

﴿رَمَانَهُ مُسْتَقْفًا﴾ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक भाक आवूद हो जिस के पास मेरा जिंक हो और वोह मुज पर दुरदे पाक न पढे. (म०)

हकीकी भाई को येह कहना : “तुम मेरे भाई नहीं हो”, कैसा ?

सुवाल : अगर जैद हकीकी भाई बक को किसी साजिश से अक मजलिस में ब आवाजे बुलन्द कलिमअे तय्यिबा पढ कर कहे के : “तुम मेरे भाई नहीं हो”, ऐसी सूरत में जैद पर ब मूजिबे शर-अ शरीफ कुछ कइंइारा लाजिम है ? अगर है तो क्या व किस कदर ?

जवाब : अगर उस के भाई ने उस के साथ कोई मुआ-मला बिलाई अफुव्वत किया जो भाई भाई से नहीं करता तो उस पर इस कहने में इल्जाम नहीं के इस नई (या'नी इन्कार) से नइिये हकीकत (या'नी हकीकत से इन्कार) मुराद नहीं होती बल्के नइिये समरा (है या'नी भाई होने की वजह से जैसा सुलूक करना याहिये वैसा सुलूक नहीं किया) और ऐसा नहीं बल्के बिला वजहे शर-ई यूं कहा तो तीन कबीरों का मुर-तकिब हुवा : (1) किज़्बे सरीह (या'नी जुला जूट) व (2) कत्अे रेह्म (या'नी रिश्ता काटना) व (3) इज्जअे मुस्लिम, इस पर तौबा इर्ज है और भाई से मुआई मांगनी लाजिम. وَاللَّهُ تَعَالَى أَعْلَمُ

रिश्ता तोडने वाले की मौजू-दगी में रहमत नहीं उतरती

“त-बरानी” में उजरते सय्यिदुना आ'मश رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से मन्कूल है, उजरते सय्यिदुना अब्दुद्लाह इब्ने मस्उद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ अक बार सुब्ह के वक्त मजलिस में तशरीफ इरमा थे, उन्हों ने इरमाया : मैंं कातेअे रेह्म (या'नी रिश्ता तोडने वाले) को अद्लाह की कसम देता हूं के वोह यहां से उठ जाअे ता के हम अद्लाह तआला से मगिइरत की दुआ करें क्यूंके कातेअे रेह्म (या'नी रिश्ता तोडने वाले) पर आस्मान के दरवाजे बन्द रहते हैं. (या'नी अगर वोह यहां मौजूद रहेगा तो रहमत नहीं उतरेगी और हमारी दुआ कबूल नहीं होगी) (الْمُعْجَمُ الْكَبِيرُ ج ٩ ص ٥٨ رقم ٨٧٩٣)

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (क़ुरआन)

नाराज़ रिश्तेदारों से सुलह कर लीजिये

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! जो जरा जरा सी बातों पर अपनी बहनों, बेटियों, झूझियों, भालाओं, मामूओं, ययाओं, भतीजों, भान्जों वगैरा से कत्थे रेह्मी कर लेते हैं, उन लोगों के लिये बयान कर्दा हदीसे पाक में इब्रत ही इब्रत है. मेरी म-दनी इल्तिजा है के अगर आप की किसी रिश्तेदार से नाराज़ी है तो अगर्चे रिश्तेदार ही का कुसूर हो सुलह के लिये षुद पहल कीजिये और षुद आगे बढ कर खन्दा पेशानी के साथ उस से मिल कर तअद्लुकात संवार लीजिये.

कत्थे रेह्मी करने वाला मग़ि़रत से मह़रम

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : पीर और जुमा'रात को अद्लाह तआला के हुज़ूर लोगों के आ'माल पेश होते हैं, तो अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ आपस में अदावत रખने और कत्थे रेह्मी करने वालों के इलावा सब की मग़ि़रत इरमा देता है. (الْمَفْعَمُ الْكَبِيرُ لِلطَّبْرَانِي ج ۱ ص ۱۶۷ حدیث ۴۰۹)

अमानत और सिलअे रेह्मी की शिकायत पर पक़ड होगी

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ है : "अमानत और सिलअे रेह्मी को भेजा जायेगा तो वोह पुल सिरात के दाअें और बाअें जानिब षडी हो जायेगी." (مسلم ص ۱۲۷ حدیث ۳۲۹) मुइस्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुइती अहमद यार खान عَلِيهِ رَحْمَةُ الْخَنَّانِ इस हदीसे पाक के तह्त इरमाते हैं : येह इन दोनों वस्फ़ों की इन्तिहाई ता'ज़ीम होगी के इन दोनों को पुल सिरात के आस पास षडा किया जावेगा शफ़ाअत और शिकायत के लिये, के इन की शफ़ाअत पर नजात, इन की शिकायत पर पक़ड होगी. इस इरमाने आली से मा'लूम हुवा के इन्सान अमानत दारी और रिश्तेदारों के हुकूक की अदायेगी ज़रूर इप्तियार करे के इन दोनों में

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुइद शरीफ़ पढो अल्लाह तुम पर रहमत भेजेगा. (अबुनूरु)

कोताही करने पर सप्त पकड है मगर एन की शफ़ाअत पर दोऊप से नजात है एन की शिकायत पर वहां गिरता है.

(मिरआतुल मनाज्जिद, जि. 7, स. 424)

तअल्लुकात तोडने की सज़ा (हिकायत)

उठरते सय्यिदुना इकीह अबुल्लैस समर कन्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي उठरते सय्यिदुना यइया “तम्बीहुल गाइलीन” में नकल करते हैं, उठरते सय्यिदुना यइया बिन सुलैम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى इरमाते हैं : मक्कअे मुकर्रमा شَرَفًا وَتَعْظِيمًا में अेक नेक शप्स पुरासान का रहने वाला था, लोग उस के पास अपनी अमानतें रखते थे, अेक शप्स उस के पास दस हजार अशरफियां अमानत रखवा कर अपनी किसी जरूरत से सफ़र में यला गया, जब वोह वापस आया तो पुरासानी झौत हो युका था, उस के अहलो एयाल से अपनी अमानत का हाल पूछा : तो उन्हों ने ला एल्मी ज़ाहिर की, अमानत रखने वाले ने उ-लमाअे मक्कअे मुकर्रमा से पूछा के मुझे क्या करना याछिये ? उन्हों ने कहा : “हम उम्मीद करते हैं के वोह पुरासानी जन्नती होगी, तुम अैसा करो के आधी या तिहाई रात गुजरने के बा’द जमजम के कुंअें पर जा कर उस का नाम ले कर आवाज देना और उस से पूछना.” उस ने तीन रातें अैसा ही किया, वहां से कोई जवाब न मिला, उस ने फिर जा कर उन उ-लमाअे किराम को बताया, उन्हों ने “إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ” पढ कर कहा : “हमें डर है के वोह शायद जन्नती न हो,” तुम यमन यले जाओ वहां भुरहूत नामी वादी में अेक कुंआं है, उस पर पड़ोंय कर एसी तरह आवाज दो, उस ने अैसा ही किया तो पडली ही आवाज में जवाब मिला के मैं ने उस को घर में झुलां जगह दइन किया है और मैं ने अपने घर वालों के पास भी अमानत को नहीं रखा, मेरे लउके के पास जाओ

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर कसरत से दुइरे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज पर दुइरे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मङ्गिरत है. (भाग १)

और उस जगह को षोदो तुम्हें मिल जायेगा युनान्हे उस ने औसा ही किया और माल मिल गया. मैं ने उस से दरयाइत किया के तू तो बहुत नेक आदमी था तू यहां पढोंय गया ? वोह बोला : मेरे कुछ रिशतेदार पुरासान में थे जिन से मैं ने कत्बे तअद्लुक (या'नी रिश्ता तोड) कर रखा था इसी हालत में मेरी मौत आ गई इस सबब से अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने मुझे येह सजा दी और इस मकाम पर पढोंया दिया. (تنبيه الغافلین ص ७२ مُلَخَّصًا)

किन रिशतेदारों से सिला वाजिब है ?

दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-अतुल मदीना की मत्बूआ 1196 सईहात पर मुश्तमिल किताब, "अदारे शरीअत" जिल्द 3 सईहा 558 ता 559 पर है : जिन रिशते वालों के साथ सिला (रेइम) वाजिब है वोह कौन हैं ? आ'ज उ-लमा ने इरमाया : वोह जू रेइम महरम हैं और आ'ज ने इरमाया : इस से मुराद जू रेइम हैं, महरम हों या न हों. और जाहिर येही कौले हुवुम है, अहादीस में मुत्लकन (या'नी बिगैर किसी कैद के) रिशते वालों के साथ सिला (या'नी सुलूक) करने का हुक्म आता है, कुरआने मज्जद में मुत्लकन (या'नी बिला कैद) अविल कुर्बा (या'नी कराअत वाले) इरमाया गया मगर येह बात जरूर है के रिशते में यूंके मुप्तलिइ द-रजात हैं (इसी तरह) सिलअे रेइम (या'नी रिशतेदारों से हुस्ने सुलूक) के द-रजात में ली तइावुत (या'नी इकी) होता है. वालिदैन का मर्तबा सब से बढ कर है, इन के आ'द जू रेइम महरम का, (या'नी वोह रिशतेदार जिन से न-सभी रिश्ता होने की वजह से निकाह हमेशा के लिये हराम हो) इन के आ'द अकिय्या रिशते वालों का अला कदरे मरातिब. (या'नी रिशते में नजदीकी की तरतीब के मुताबिक)

करमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर अक दुइद शरीफ़ पढता है अल्लाह उंस के लिये अक कीरात अज्ज लिखता है और कीरात उहुद पहाड जितना है. (मोहम्मद)

“मू रेह्म महरम” और “मू रेह्म” से मुराद ?

मुहम्मदस्सिरे शहीर, उकीमुल उम्मत, उजरते मुहम्मदी अहमद यार पान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّانِ सू-रतुल अ-करुल की आयत 83
 وَإِلَىٰ آلِ الرَّسُولِ مِمَّا فَرَغْنَا لَهُمْ مِنْ شَأْنِهِمْ وَلِأُولَىٰ آئِلَتِهِم مِّمَّا فَرَغْنَا لَهُمْ مِنْ شَأْنِهِمْ وَلِأُولَىٰ آئِلَتِهِم مِّمَّا فَرَغْنَا لَهُمْ مِنْ شَأْنِهِمْ : और
 मां बाप के साथ बलाई करो और रिश्तेदारों से.” के तहत “तफ़सीरे नईमी”
 में लिखते हैं : और कुर्बा अ मा’ना कराबत है या’नी अपने अहले
 कराबत के साथ अहसान करो, यूंके अहले कराबत का रिश्ता मां बाप के
 जरीअे से होता है और इन का अहसान भी मां बाप के मुकाबले में
 कम है इस लिये इन का उक भी मां बाप के बा’द है, इस जगह भी
 यन्द उिदायतें हैं : पहली उिदायत : जिल कुर्बा वोह लोग हैं जिन का
 रिश्ता अ जरीअे मां बाप के हो जिसे “जी रेह्म” भी कहते हैं, येह
 तीन तरु के हैं : अक बाप के कराबत दार जैसे दादा, दादी, यया,
 झूठी वगैरा, दूसरे मां के जैसे नाना, नानी, मामूं, पाला, अप्याझी
 (या’नी जिन का बाप अलग अलग हो और मां अक हो अैसे भाई और बहन
 का) भाई वगैरा, तीसरे दोनों के कराबत दार जैसे उकीकी भाई बहन.
 इन में से जिस का रिश्ता कवी होगा उस का उक मुकदम. दूसरी उिदायत :
 अहले कराबत दो किस्म के हैं अक वोह जिन से निकाह उराम है, इनहें
 जी रेह्म महरम (या’नी अैसा करीबी रिश्तेदार, के अगर इन में से जिस
 किसी को भी मर्द और दूसरे को औरत इर्ज किया जाअे तो निकाह उमेशा के लिये
 उराम हो जैसे बाप, मां, बेटा, बेटी, भाई, बहन, यया, झूठी, मामूं,
 पाला, भान्ज, भान्ज वगैरा) कहते हैं, जैसे यया, झूठी, मामूं, पाला
 वगैरा. जरुरत के वक्त इन की प्दिमत करना इर्ज है न करने वाला
 गुनहगार होगा. दूसरे वोह जिन से निकाह उलाल जैसे पाला,
 मामूं यया की औलाद इन के साथ अहसान व सुलूक करना सुन्ते

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुज पर दुर्रदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये ईस्तिस्कार करते रहेंगे. (अ. 1)

मुअक्कदा है और बहुत सवाब लेकिन हर कराबत दार बल्के सारे मुसल्मानों से अच्छे अज्दाक के साथ पेश आना जरूरी और इन को ईजा पछोंयानी हराम. (तफ़्सीर उरु) तीसरी खिदायत : सुसराली दूर के रिश्तेदार जी रेह्म नहीं, हां इन में से बा'ज महरम हैं जैसे सास और दूध की मां, बा'ज महरम भी नहीं, इन के भी हुकूक हैं यहां तक के पडोसी के भी हक हैं मगर येह लोग इस आयत में दाखिल नहीं क्यूंके यहां रेह्मी और रिश्ते वाले मुराद हैं. (तफ़्सीरे नईमी, जि. 1, स. 447)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

“हुस्ने सुलूक” के सात हुइइ की निस्बत से सिलअे रेह्मी के 7 म-दनी इूल

दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-अतुल मदीना की मत्बूआ 1197 सईहात पर मुश्तमिल किताब, “अदारे शरीअत” जिल्द 3 सईहा 559 ता 560 पर से “हुस्ने सुलूक” के सात हुइइ की निस्बत से सात म-दनी इूल कबूल इरमाईये :

❦ 1 ❦ किस रिश्तेदार से क्या जरताव करे

अहादीस में मुत्लकन (या'नी बिगैर किसी कैद के) रिश्ते वालों के साथ सिला (या'नी सुलूक) करने का हुकूम आता है, कुरआने मज्द में मुत्लकन (या'नी बिला कैद) अविल कुर्बा (या'नी कराबत वाले) इरमाया गया मगर येह बात जरूर है के रिश्ते में यूंके मुप्तलिइ द-रजात हैं (ईसी तरह) सिलअे रेह्म (या'नी रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक) के द-रजात में भी तइावुत (या'नी इकी) होता है वालिदैन का मर्तबा सब से बढ कर है, इन के बा'द जू रेह्म महरम का, (या'नी वोह रिश्तेदार जिन से न-सबी रिश्ता होने की वजह से निकाह उमेशा के लिये हराम हो) इन के बा'द

﴿۲﴾ **इरमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर अक बार दुइदे पाक पढा अल्लाह عُزَّوَجَلَّ उस पर दस रउमतें भेजता है. (सुल)

बकिय्या रिश्ते वालों का अला कदरे मरातिब. (या'नी रिश्ते में नजदीकी की तरतीब के मुताबिक) (رَدُّ الْمُحْتَار ج ۹ ص ۱۷۸)

﴿2﴾ रिश्तेदार से सुलूक की सूरतें

सिलअे रेहूम (या'नी रिश्तेदारों के साथ सुलूक) की मुप्तलिफ़ सूरतें हैं, एन को हदिय्या व तोहफ़ा देना और अगर एन को किसी बात में तुम्हारी एआनत (या'नी एमदाद) दरकार हो तो एस काम में एन की मदद करना, एन्हें सलाम करना, एन की मुलाकात को ज़ाना, एन के पास उठना बैठना, एन से बातचीत करना, एन के साथ लुत्फ़ो मेहूरबानी से पेश आना. (نَدْوَر، ج ۱ ص ۳۲۳)

﴿3﴾ परदेस हो तो षत भेजा करे

अगर येह शप्स परदेस में है तो रिश्ते वालों के पास षत भेजा करे, उन से षतो किताबत ज़ारी रभे ता के बे तअल्लुकी पैदा न होने पाअे और हो सके तो वतन आअे और रिश्तेदारों से तअल्लुकात ताज़ा कर ले, एस तरह करने से महब्बत में एजाज़ा होगा. (رَدُّ الْمُحْتَار ج ۹ ص ۱۷۸) (इोन या एन्टरनेट के ज़रीअे ली राबिते की तरकीब मुझीद है)

﴿4﴾ परदेस में हो, मां बाप बुलाओं तो आना पडेगा

येह परदेस में है वालिदैन एसे बुलाते हैं तो आना ही होगा, षत लिषना काई नहीं है. यूंही वालिदैन को एस की षिदमत की हाज़त हो तो आअे और उन की षिदमत करे, बाप के बा'द दादा और बडे ल्माँ का मर्तबा है के बडा ल्माँ ब मन्जिला बाप के होता है, बडी बहन और ज़ाला मां की जगह पर हैं, बा'ज उ-लमा ने यया को बाप की मिसल बताया और हदीस : **عَمُّ الرَّجُلِ صِنُؤُ أَبِيهِ** (या'नी आदमी का यया बाप की मिसल होता है) से ली येही मुस्तफ़ाद होता (या'नी नतीज़ा

﴿۱﴾ **करमाने मुस्तफ़ा** عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शप्स मुज पर दुर्रदे पाक पढना भूल गया वोह जन्त का रास्ता भूल गया. (طبرانی)

निकलता) है. इन के धलावा औरों के पास षत भेजना या हदिय्या (या'नी तोहफ़ा) भेजना किफ़ायत करता है. (ردُّ الْمُحْتَارِ ج ۹ ص ۶۷۸)

﴿5﴾ किस किस रिश्तेदार से कब कब मिले

रिश्तेदारों से नागा दे कर मिलता रहे या'नी अक दिन मिलने को ज़ाअे दूसरे दिन न ज़ाअे **وَعَلَىٰ هَذَا الْقِيَاس** (या'नी इसी पर अन्दाज़ा लगा कर) के इस से महब्बत व उल्फ़त ज़ियादा होती है, बल्के अकरिबा (या'नी कराबत दारों) से ज़ुमुआ ज़ुमुआ मिलता रहे या महीने में अक बार और तमाम कबीले और पानदान को अक (या'नी मुत्तहिद) होना याहिये, जब हक उन के साथ हो (या'नी वोह हक पर हों) तो दूसरों से मुकाबला और धजहारे हक में सब मुत्तहिद हो कर काम करें. (تَرْغِيبٌ ۱ ص ۳۲۳)

﴿6﴾ रिश्तेदार हाजत पेश करे तो रद कर देना गुनाह है

जब अपना कोई रिश्तेदार कोई हाजत पेश करे तो उस की हाजत रवाध करे, उस को रद कर देना कत्अे रेह्म (या'नी रिश्ता तोडना) है. (إِيضًا) (याद रहे ! सिलअे रेह्म वाजिब है और कत्अे रेह्म हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है)

﴿7﴾ सिलअे रेह्म येह है के वोह तोडे तब भी तुम जोडो

सिलअे रेह्मी (रिश्तेदारों के साथ अख़्ण सुलूक) इसी का नाम नहीं के वोह सुलूक करे तो तुम भी करो, येह यीज़ तो हकीकत में मुकाफ़ात या'नी अदला बदला करना है के उस ने तुम्हारे पास यीज़ भेज दी तुम ने उस के पास भेज दी, वोह तुम्हारे यहां आया तुम उस के पास यले गअे. हकीकतन सिलअे रेह्म (या'नी कामिल द-रजे का रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक) येह है के वोह काटे और तुम जोडो, वोह तुम से ज़ुदा होना याहता

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइदुइ पाक न पढा तहकीक़ वोह भद भप्त हो गया. (अबू अयूब)

है, बे अे'तिनाई (या'नी ला परवाही) करता है और तुम उस के साथ रिश्ते के हुकूक की मुराआत (या'नी विहाज व रिआयत) करो. (رَدُّ الْمُحْتَارِ ج ٩ ص ١٧٨)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

हुस्ने झन रफने का तरीका

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! मजकूर सातो म-दनी झूल निहायत तवज्जोह के काबिल हैं, बिल फुसूस सातवें म-दनी झूल जिस में “अदले भदले” का जिक्र है इस के बारे में अर्ज है के आज कल उमूमन येही “अदला भदला” हो रहा है. अेक रिश्तेदार अगर इस को शादी की दा'वत देता है जल्मी येह उस को देता है अगर वोह न दे तो येह भी नहीं देता. अगर उस अेक ने इस को जियादा अइराद की दा'वत दी और येह अगर उस को कम अइराद की दा'वत दे तो इस का ठीकठाक नोटिस लिया जाता, फूभ तन्कीदें और गीबतें की जाती हैं. इसी तरह जो रिश्तेदार इस के यहां किसी तकरीब में शिकत नहीं करता तो येह उस के यहां डोने वाली तकरीब का बायकाट कर देता है और यूं झसिले मजीद भढाअे जाते हैं. डालांके कोई डमारे यहां शरीक न हुवा हो तो उस के बारे में अख्ण गुमान रफने के कई पहलू निकल सकते हैं, म-सलन वोह न आने वाला भीमार हो गया डोगा, भूल गया डोगा, झरूरी काम आ पडा डोगा, या कोई सप्त मजबूरी डोगी जिस की वजाहत उस के लिये दुश्वार डोगी वगैरा. वोह अपनी गैर डालिरी का सबभ बताअे, या न बताअे डमें हुस्ने झन रफ कर सवाभ कमाना और जन्नत में जाने का सामान करते रहना थालिये. थुनान्थे इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : حُسْنُ الظَّنِّ مِنْ حُسْنِ الْعِبَادَةِ - صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

अन उम्दा ईबादत से है. (ابوداؤد ج ٤ ص ٣٨٨ حديث ٤٩٩٣)

ફરમાને મુસ્તફા صَلَّی اللہُ تَعَالَى عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : જિસ ને મુઝ પર એક બાર દુરુદે પાક પઢા અલ્લાહ اَعَزَّ وَجَلَّ ઉસ પર દસ રહમતે ભેજતા હૈ. (مسلم)

મુફ્સિરે શહીર હકીમુલ ઉમ્મત હઝરતે મુફ્તી અહમદ યાર ખાન عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ઇસ હદીસે પાક કે મુખ્તલિફ મતાલિબ બયાન કરતે હુએ લિખતે હૈં : યા'ની મુસલ્માનોં સે અચ્છા ગુમાન કરના, ઇન પર બદ ગુમાની ન કરના યેહ ભી અચ્છી ઇબાદત મેં સે એક ઇબાદત હૈ.

(મિરઆતુલ મનાજીહ, જિ. 6, સ. 621)

જન્નત કા મહલ ઉસ કો મિલેગા જો.....

બિલફઝ્ હમારા રિશ્તેદાર સુસ્તી કે સબબ યા કિસી ભી વજહ સે જાન બૂઝ કર હમારે યહાં નહીં આયા યા હમેં અપને યહાં મદૂઝી નહીં કિયા બલકે ઉસ ને ખુલ્લમ ખુલ્લા હમારે સાથ બદ સુલૂકી કી તબ ભી હમેં બડા હૌસલા રખતે હુએ તઅલ્લુકાત બર કરાર રખને ચાહિએં, હઝરતે સય્યિદુના ઉબય બિન કા'બ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ સે રિવાયત હૈ કે સુલ્તાને દો જહાન, શહન્શાહે કૌનો મકાન, રહમતે આ-લમિય્યાન صَلَّی اللہُ تَعَالَى عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم કા ફરમાને અઝીમુશ્શાન હૈ : જિસે યેહ પસન્દ હો, કે ઉસ કે લિયે (જન્નત મેં) મહલ બનાયા જાએ ઓર ઉસ કે દ-રજાત બુલન્દ કિયે જાએં, ઉસે ચાહિયે કે જો ઇસ પર ઝુલ્મ કરે યેહ ઉસે મુઆફ કરે ઓર જો ઇસે મહરૂમ કરે યેહ ઉસે અતા કરે ઓર જો ઇસ સે કત્એ તઅલ્લુક કરે યેહ ઉસ સે નાતા (યા'ની તઅલ્લુક) જોડે.

(الْمُسْتَدْرَكُ لِلْحَاكِمِ ج 3 ص 12 حديث 3215)

દુશ્મની છુપાને વાલે રિશ્તેદાર કો સ-દકા દેના અફઝલ તરીન હૈ

બહર હાલ કોઈ હમારે સાથ હુસ્ને સુલૂક કરે યા ન કરે હમેં હુસ્ને સુલૂક જારી રખના ચાહિયે. “મુસ્નદે ઇમામ અહમદ બિન હમ્બલ” કી હદીસે પાક મેં હૈ : إِنَّ أَفْضَلَ الصَّدَقَةِ الصَّدَقَةُ عَلَى ذِي الرَّجْمِ الْكَاشِحِ - યા'ની બેશક અફઝલ તરીન સ-દકા વોહ હૈ જો દુશ્મની છુપાને વાલે રિશ્તેદાર પર કિયા જાએ. (مُسْنَدُ إِمَامِ أَحْمَدَ بْنِ حَنْبَلٍ ج 9 ص 138 حديث 23589)

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शम्स मुज पर दुइडे पाक पढना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया. (طبرانی)

रिश्तेदार से जब सप्त दुप पढोंया

अमीरुल मुअमिनीन उजरते सय्यिदुना अबू बक सिदीक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को अपने जालाज्जद भाई गरीबो नादार व मुहाजिर और बद्दी सहाबी उजरते सय्यिदुना मिस्तह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ जिन का आप भर्य उठाते थे उन से सप्त रन्ज पढोंया और वोह येह के उन्हों ने आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की प्यारी बेटी या'नी उम्मुल मुअमिनीन उजरते सय्यि-दतुना आईशा सिदीका رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا पर तोहमत लगाने वालों के साथ मुवा-इकत की थी, ईस पर आप (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) ने भर्य न देने की कसम भाई. ईस पर पारह 18 सू-रतुनूर की आयत नम्बर 22 नाजिल हुई. वोह आयते मुवा-रका येह है :

وَلَا يَأْتَلِ أُولُو الْفَضْلِ مِنْكُمْ

وَالسَّعَةِ أَنْ يُوتُوا أُولِي الْقُرْبَىٰ وَ

السَّكِينِ وَالْمُهَاجِرِينَ فِي سَبِيلِ

اللَّهِ وَيَعْفُوا وَيَصْفَحُوا ۗ أَلَا

تُحِبُّونَ أَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَكُمْ ۗ

وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٢٢﴾

तर-ज-मअे कन्जुल ईमान : और कसम न भाअें वोह जो तुम में इज्जिलत वाले और गुन्जईश वाले हैं कराभत वालों और भिस्कीनों और अद्लाह की राह में हिजरत करने वालों को देने की और याहिये के मुआइ करें और दर गुजरें क्या तुम ईसे दोस्त नहीं रभते के अद्लाह तुम्हारी बप्शिश करे और अद्लाह बप्शने वाला मेहरबान है.

जब येह आयत सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने पढी तो उजरते सय्यिदुना अबू बक सिदीक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने कहा : भेशक मेरी आरजू है के अद्लाह (عَزَّ وَجَلَّ) मेरी भगिहरत करे और मैं भिस्तह (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) के साथ जो सुलूक करता था उस को कभी भौकूइ (या'नी बन्द) न करुंगा युनान्ये आप (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) ने उस (भाली

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिसके पास मेरा जिंक हुआ और उसने मुझ पर दुर्रदे पाक न पढा तलकीक़
वो ल भद भप्त हो गया. (अज़ा)

तआवुन) को जारी इरमा दिया. इस आयत से मा'लूम हुआ के जो शप्स
किसी काम पर कसम जाये इर मा'लूम हो के उस का करना ही बेहतर
है तो याहिये के उस काम को करे और कसम का कफ़ारा दे, उदीसे
सहीह में येही वारिद है. मजीद इरमाते हैं : इस आयत से हज़रते
सिदीके अक़बर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की इज़ीलत साबित हुई, इस से आप की
उलुव्वे शानो मर्तबत (या'नी रुत्बे की अ-ज़मत) जाहिर होती है के अद्लाह
तआला ने आप (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) को (आयते कुरआनी में) **أَوْلُوا الْفَضْلُ**
(या'नी इज़ीलत वाला इशाद) इरमाया. (अज़ा'नुल इरफ़ान, स. 563)

अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी बे हिसाब
मग़ि़रत हो.

أَمِينٍ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

अयां हो किस ज़बां से मर्तबा सिदीके अक़बर का
है यारे गार मडबूबे भुदा सिदीके अक़बर का
मकामे प्वाबे राहत यैन से आराम करने को
बना पडलूअे मडबूबे भुदा सिदीके अक़बर का

(जौके ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

येह रिशाला पढ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी गमी की तकरीबात, इजतिमाआत, आ'रास
और जुलूसे मीलाद वगैरा में मक-त-बतुल मदीना के शाअेअ
कदा रसाथल और म-दनी इल्लों पर मुशतमिल पेम्फ्लेट
तकसीम कर के सवाब कमाईये, गाहकों को ब नित्यते सवाब
तोहफे में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाथल रपने
का मा'मूल बनाईये, अफ़बार इरोशों या बय्यों के जरीअे
अपने मडले के घर घर में माहाना कम अज कम अक अदद
सुन्नतों लरा रिशाला या म-दनी इल्लों का पेम्फ्लेट पडोंया
कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाईये और भूब सवाब कमाईये.

गमे मदीना, बकीअ,
मग़ि़रत और बे
हिसाब जन्नतुल
इरदौस में आका
के पडोस का तालिब



16 मुडर्रमुल हुराम 1436 सि.हि.

10-11-2014

तंगदस्ती से बचने का नुरूपा और जन्नत का भजाना

ﷺ : صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

﴿1﴾ कोई घर वाले जैसे नहीं के आपस में सिलअे रेहूमी (या'नी रिश्तेदारों के साथ अशुभ बरताव) करें फिर मोहताज (या'नी तंगदस्त) हो जाओ¹ ﴿2﴾ यार यीजें जन्नत के भजानों में से हैं : स-दका छुपा कर देना, मुसीबत छुपाना, सिलअे रेहूमी करना और
لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ²

1: الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان ج 1 ص 333 حديث 441

2: تاريخ بغداد ج 3 ص 404



मक-त-अतुल मदीना[®]

दा'वते एह्लेलाही

इंजाने मदीना, श्री कोनिया जगीचे के सामने, मिर्जापूर, अहमदाबाद-1. गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net